वर्ष 26

वेदान्त आश्रम एवं मिशन की मासिक ई-पत्रिका

अंक 8

वेदान्त पीयूष

अगस्त 2026

सम्पादिका :

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

वेदान्त पीयूष

अगस्त २०२६

वेदान्त आश्रम,
ई - 2950, सुदामा नगर
इन्दौर - 452009
Web: https://www.vmission.org.in
email : vashram.in@gmail.com

विषय सूचि

०२	प्रकाशक
०५	श्लोक
०६	सन्देश
१४	वाक्यवृत्ति
१९	गीता और मानवजीवन
२६	जीवन्मुक्त
३१	कैकेयी चरित्र
३६	कथा – भक्तराज ध्रुव
४०	आश्रम एवं मिशन गतिविधियां
६५	कार्यक्रम
६७	इन्टरनेट
६८	लिन्क

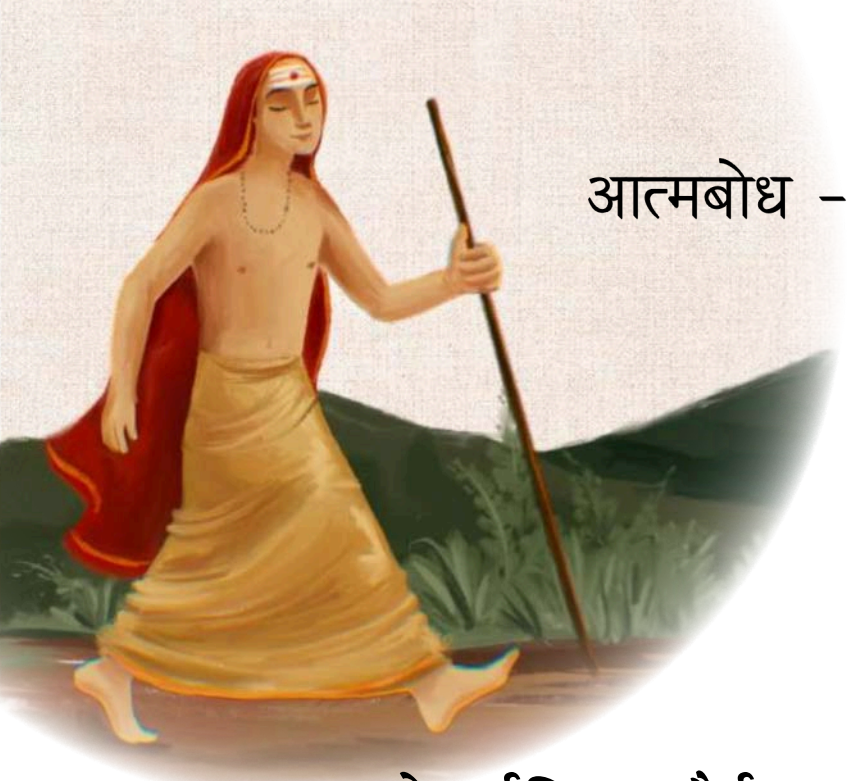

आत्मबोध – श्लोक ६०

यद्भासा भास्यतेऽर्कादि भास्यैर्यत्तु न भास्यते।
येन सर्वमिदं भाति तद्ब्रह्मेत्यवधारयेत्।।

जिसके प्रकाश से सूर्य आदि प्रकाशित होते है। किन्तु जो किसी अन्य के प्रकाश से प्रकाशित नहीं होता है। जिससे यह सब कुछ प्रकाशित होता है उसे तुम ब्रह्म जानों।

सन्देश

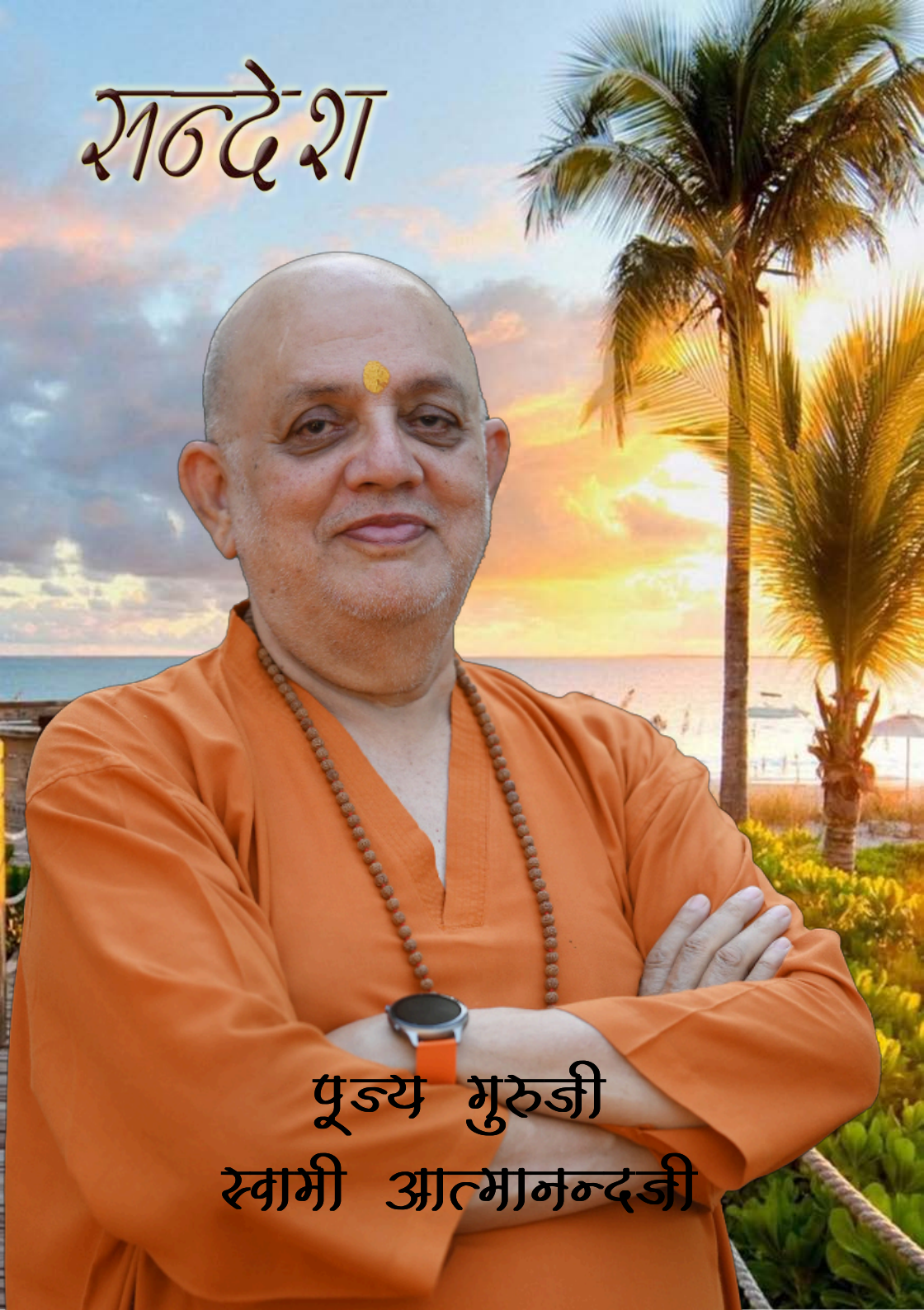

पूज्य गुरुजी
स्वामी आत्मानन्दजी

योगारूढ

वास्तविक योग ब्रह्मज्ञान के लिए है–

भगवद्गीता के छठे अध्याय में वर्णित ध्यानयोग साधक के जीवन में एक अद्भुत रुपान्तरण का मार्ग है। यह केवल मन को शान्त करने की साधना नहीं, बल्कि एक पूर्णतः नवीन दृष्टि में जाग्रति है। जिस साधक को आत्मज्ञान प्राप्त होता है, वह अवस्था सामान्य व्यक्ति की कल्पना से भी परे होती है। यही ब्रह्मज्ञान है।

असत्य का निषेध और सत्य का साक्षात्कार

आत्मज्ञान की महिमा धीरे धीरे प्रकट होती है। यह कोई अचानक होनेवाला चमत्कार नहीं, बल्कि मिथ्या धारणाओं का क्रमशः निराकरण करते हुए सत्य का उदय है। यह जाग्रति किसी सीमित व्यक्ति अर्थात् जीव का अनुभव नहीं, बल्कि उस अवस्था का दर्शन है, जिसमें व्यक्ति अपनी सीमित अहंता का पूर्णतः अतिक्रमण कर देता है।

साधक को स्वयं प्रयास करना पडता है, किन्तु वह प्रयास अहं की संतुष्टि के लिए नहीं, बल्कि उसके विसर्जन के लिए होता है। तब भी जीवन चलता रहता है, परन्तु 'मैं एक सीमित जीव हूं' यह संकुचित भावना समाप्त हो जाती है।

जीव अज्ञान से उत्पन्न होता है

अपने वास्तविक स्वरूप का अज्ञान और उसके बाद शरीर, मन एवं इन्द्रियों के साथ तादात्म्य की भ्रान्ति, एक सीमित जीव की उत्पत्ति

up

का कारण बनती है। जैसे ही यह सीमित जीवभाव उत्पन्न होता है, संसार के प्रति दृष्टि भी संकुचित व खण्डित हो जाती है। परिणामस्वरूप मनुष्य अपूर्णता–बोध, भय, असुरक्षा और निरन्तर खोज में भटकता रहता है। यह मूल अज्ञान ही समस्त दुःखों का कारण है। इसी कारण करुणामय महापुरुष केवल प्रामाणिक ज्ञान के द्वारा लोगों को इस बन्धन से मुक्त करने का प्रयास करते हैं।

जाग्रति सूर्य के उदय के समान है

योगी का अपने वास्तविक स्वरूप में जगना किसी नई वस्तु की प्राप्ति नहीं है। यह सूर्य के उदय की भांति धीरे, धीरे घटित होनेवाली प्रक्रिया है। हमारा वास्तविक स्वरूप तो सदैव विद्यमान है, केवल उसका ज्ञान होना शेष है।

इसलिए शास्त्र कहते है कि 'मोक्ष केवल ज्ञान से होता है, कर्म से नहीं।' कर्म किसी वस्तु में परिवर्तन ला सकता है, किन्तु ज्ञान केवल पहले से विद्यमान सत्य को प्रकाशित करता है।

पहले विक्षेप, फिर आवरण का निवारण–

आत्मज्ञान की प्राप्ति धीरे–धीरे इसलिये होती है,

up

क्योंकि केवल अज्ञान ही दूर नहीं करना होता, बल्कि अज्ञान के कारण मन और बुद्धि में संचित विक्षेप, आसक्तियां, राग–द्वेष और भ्रान्त धारणाओं को भी शुद्ध करना होता है।

जो वास्तव में अनन्त और अविनाशी है, उसने स्वयं को सीमित मान लिया और उसी भ्रान्ति के आधार पर सम्पूर्ण जीवन की योजना बना ली। यह अज्ञान और उसके उपर चढ़े मानसिक आवरणों का परिणाम है।

<u>चित्तशुद्धि का महत्व–</u>

अतः साधना का प्रारम्भ अपने राग–द्वेष, आसक्तियां और मानसिक अशान्तियों के परिष्कार से होता है। ये सब अज्ञान के ही परिणाम है। यही 'कर्मयोग' और अन्य योग हमारी सहायता करते है। धीरे–धीरे पुराना सीमित जीवनदर्शन समाप्त होता है और उसके स्थान पर व्यापक, उदार एवं सत्यपरक दृष्टिकोण का उदय होता है। जैसे जब तक रस्सी को सांप समझते रहेंगे, तब तक रस्सी का वास्तविक स्वरूप ज्ञात नहीं होगा।

आत्मज्ञान अज्ञान का नाश करता है–

जब साधक निष्पक्षता, विवेक और तटस्थ दृष्टि से सत्य को देखता है, तब उसकी सीमित व्यक्तित्व की बुद्धि विलीन होने लगती है और आत्मजाग्रति होती है।

भगवान श्रीकृष्ण छठे अध्याय में कहते हैं कि इस जाग्रति का फल केवल गहन शान्ति और परमानन्द ही नहीं है, बल्कि एक अद्वितीय और अलौकिक दिव्य दृष्टि भी है।

दिव्य दृष्टि के दो आयाम–

इस दिव्य दृष्टि के दो पक्ष है।

1. व्यवहार में दिव्य दृष्टि

जब ज्ञानी संसार के असंख्य नामरूपों को देखता है, तब वह उनकी विविधता को भी देखता है और साथ ही यह भी देखता है कि उन सबमें एक ही आत्मस्वरूप, एक ही स्वप्रकाश चैतन्य विद्यमान है। वह जानता है कि वही सबके स्वरूपभूत आत्मा है। प्रत्येक प्राणी, प्रत्येक वस्तु केवल ईश्वरमय ही

up

नहीं है, बल्कि वही 'मैं' है। जिस आत्मा का साक्षात्कार हुआ है, वही समस्त जगत की आत्मा है।

यह अनुभूति आश्चर्यजनक, क्रान्तिकारी और बुद्धि को विस्मित कर देनेवाली है।

2. ध्यान में दिव्य दृष्टि–

जब ज्ञानी ध्यान में अपने आत्मस्वरूप का साक्षात्कार करता है, तब वह सम्पूर्ण जगत को अपने ही स्वरूप में स्थित देखता है। जैसे जागने पर सम्पूर्ण स्वप्न अपने भीतर ही प्रतीत होता है, वैसे ही ब्रह्मज्ञानी सम्पूर्ण चराचर जगत को अपने आत्मस्वरूप में स्थित देखता है।

देश, काल और सम्पूर्ण परिवर्तनशील जगत केवल मायामय उपाधियों का प्रपंचमात्र है। सत्य एकमात्र 'सच्चिदानन्द ब्रह्म' है। हमारे आराध्य भगवान् भी वही है, यह जगत

up

भी वही है। प्रत्येक जीव वही है। और वास्तव में वही मैं हूं।

<u>योग का वास्तविक उद्देश्य–</u>

अतः ध्यान केवल मानसिक शान्ति प्राप्त करने का साधन नहीं है। उसका वास्तविक उद्देश्य इस सीमित दृष्टि से परे जाकर अद्वैत की सार्वभौमिक ब्रह्ममयी दृष्टि में प्रतिष्ठित होना है। यही ब्रह्मज्ञान है। यही वास्तविक योग है। यही मानवजीवन का सर्वोच्च परं पुरुषार्थ है।

ॐ तत्सत्।।

आदि शंकराचार्य

द्वारा

विरचित

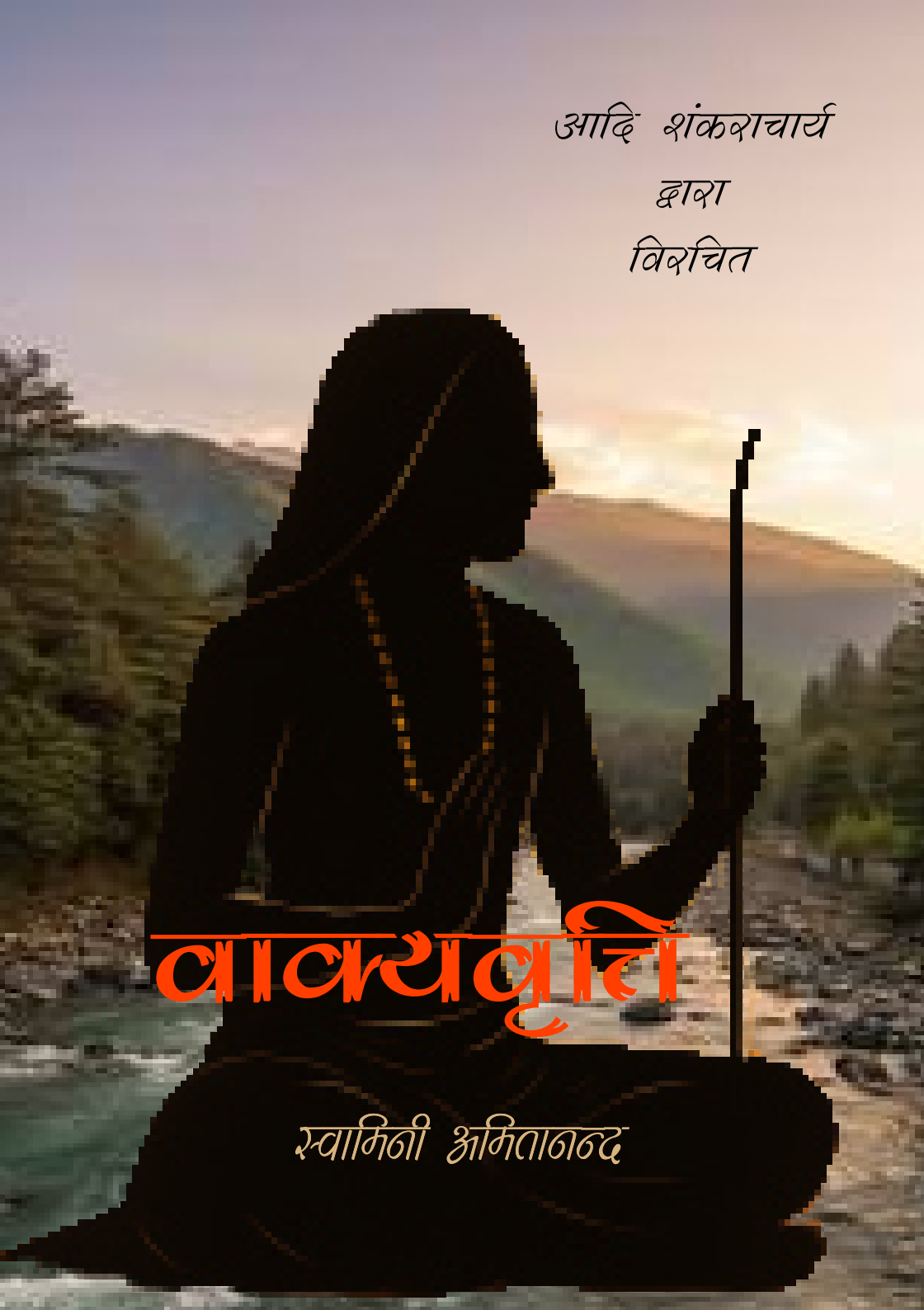

वाक्यवृत्ति

स्वामिनी अमितानन्द

श्लोक - ३७

तत्वंपदार्थौ निर्णीतौ वाक्यार्थश्चिन्त्यतेऽधुना।
तादात्म्यमत्र वाक्यार्थः तयोरेव पदार्थयोः॥

इस प्रकार तत् और त्वं पद के अर्थ का निर्णय करने के उपरान्त अब वाक्यार्थ का निर्णय करते हैं। महावाक्य में इन तत् और त्वं के तादात्म्य अर्थात् अभेद के अर्थ को ही स्वीकार किया गया है।

वाक्यवृत्ति
श्लोक संख्या : ३७

इस ग्रंथ के 'वाक्यवृत्ति' नाम के अनुरूप ग्रंथ की विवक्षा अर्थात् ग्रंथ का आशय 'तत्त्वमसि' महावाक्य के अर्थ पर व्याख्या करना है। इस महावाक्य में तीन पद है– तत्, त्वं और असि; जिसका अर्थ होता है, 'तुम वह हो!' आचार्य ने पूर्व श्लोकों में त्वं अर्थात् जीव के तथा तत् अर्थात् ईश्वर के वाच्यार्थ और लक्ष्यार्थ को श्रुति आदि प्रमाणों के माध्यम से प्रतिपादित किया गया था।

सर्व प्रथम यहां त्वं पद पर विचार किया गया। त्वंपद

का अर्थ है, जीवात्मा, जो स्थूल, सूक्ष्म और कारणशरीर से उपहित चेतना है। यह जीव शब्द का वाच्यार्थ है। 'त्वं' पद का वास्तविक स्वरूप अर्थात् लक्ष्यार्थ तो शुद्ध चैतन्यस्वरूप तत्व है। स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर तो उपाधिमात्र है, जो कि नैमित्तिक है, परिवर्तनशील है। अतः इन शरीरत्रय का निषेध करके केवल साक्षी चैतन्य ही त्वंपद का लक्ष्यार्थ अथ्वा तात्पर्य जानना चाहिए। इस प्रकार त्वंपद पर 11वें से 27वें श्लोक पर्यन्त विचार करके बताया गया।

उसी प्रकार आगे के श्लोकों में तत् पद अर्थात् ईश्वर के बारे में विचार आरम्भ किया गया। चेतनसत्ता के साथ जब मायाशक्ति जुड़ी होती है, तब वही परमात्मा जगत् के सृष्टा, पालयिता और संहारक बनते हैं। अर्थात् माया से उपहित चेतना तत् पद का अर्थ है। माया की वजह से वे सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ तथा अनेकानेक

up

दिव्य गुणों से सम्पन्न ईश्वर होते है। किन्त यह भी मायामय उपाधिमात्र है। उसका वास्तविक अर्थ, लक्ष्यार्थ शुद्ध चैतन्य ही है।

इस प्रकार तत् और त्वं पद के अर्थका निर्णय करने के उपरान्त अब पूरे महावाक्य पर विचार किया जा रहा है, जिसके बारे में आचार्य ने बताया कि इन दोनों पदों का तादात्म्य अर्थात् अभेद ही स्वीकारा जाता है। उस विषय पर आगामी श्लोकों में चर्चा की जाएगी।

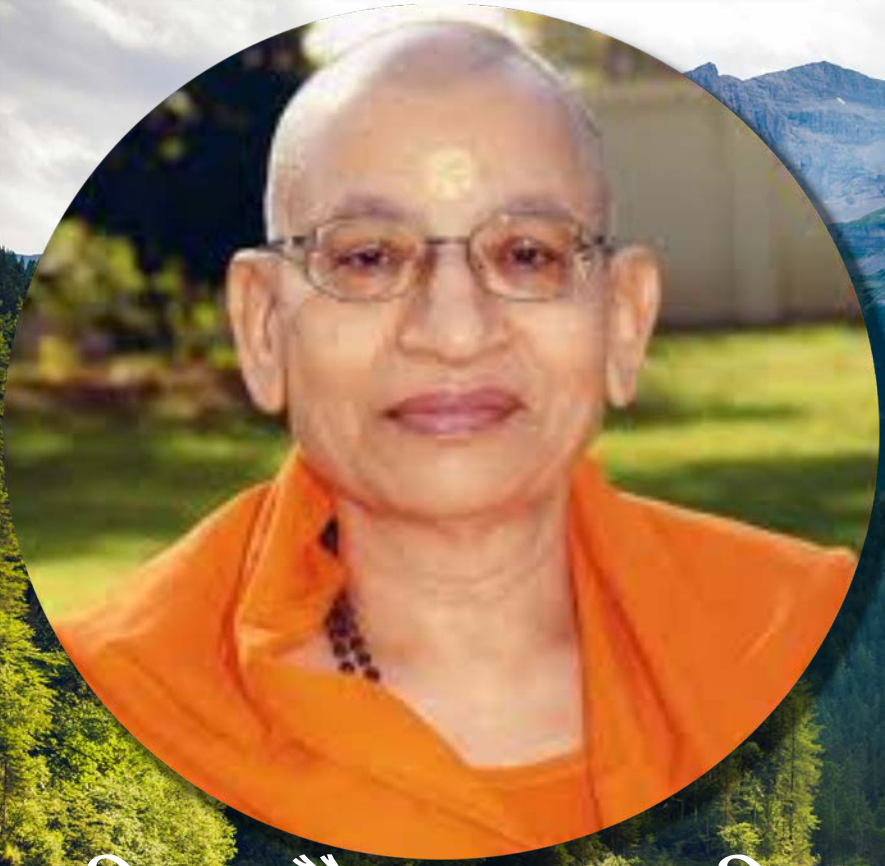

गीता और मानवजीवन

पूज्य स्वामी विदितात्मानन्दजी

- ४१ -

कामना-त्याग

गीता और मानवजीवन

कामना–त्याग

भगवद्गीताका अन्तिम उपदेश है; 'सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।'

'हे अर्जुन् सब धर्मों का त्याग करके मुझ एक की शरण में आओ। हम तुम्हें पापों से और दुःख से मुक्त करेंगे, तुम शोक मत करों।'

धर्म का त्याग, यह कैसी बात? हम क्या अपना वैष्णवधर्म, शैवधर्म, स्वामिनारायणधर्म छोड़ दें? नहीं, इन धर्मों को छोडने को हमें कोई नहीं बताता। 'तो क्या हम अपने कर्तव्यों को छोड़ दें? जीवन के मूल्य

छोड़ दे? इसकी भी बात नहीं की जा रही। यहां धर्म का अर्थ जीवन की समस्त अभिलाषाएं, महत्वाकांक्षाएं। भगवान कहते हैं कि समस्त कामनाओं का त्याग करके 'मात्र मुझे ही पाने की इच्छा कर'।

किन्तु कामनाओं का त्याग कैसे हो? कामनाओं का त्याग करना हमारे हाथ में नहीं है। कामनाओं का त्याग करना अर्थात् उसका अनादर करना, तिरस्कार करना या दमन करना है? ऐसा करनेसे तो और भी मुसीबतें बढ़ेगी। और अंत में उनका त्याग नहीं कर पाने के कारण मन में अपराध की भावना जगती है, तो क्या करें?

उसके लिए कामना को समझना आवश्यक है। जगत में दो वस्तु है – कारण और कार्य। कार्य का त्याग करना हो तो कारण का त्याग करना पड़ता है। ऐसा करने से अपने आप ही

up

कार्य का त्याग हो जाएगा। कारण दूर नही होगा तब तक कार्य उत्पन्न होता ही रहेगा। जब तक जमीन में बीज होगा तब तक अंकुर फूटते ही रहेगे, भले ही कितनी भी बार उपर-उपर से उसे काट डाले। जब तक बीज को, कारण को नीकालकर नहीं फेंकेंगे, तब तक अंकुररूपी कार्य उत्पन्न होता रहेगा। बचपन का हमारा एक अनुभव है। एक वयस्क पडोशी रोज सुबह सुबह आकर धरमें से एकलोती कुर्सी पर कब्जा करके बैठ जाएं और अखबार आएं तो उसे उठा ले और पढ़ने लगे। घर में चाय-पानी होने पर उन्हें भी प्रस्तुत किये जाते थे। चाय पीते हुए आराम से पूरा शब्दशः अखबार पढ़ते थे। हम उसे कहते कि हम अखबार पढ़कर आपके घ्ज्ञर पहुंचा देंगे, तो भी मानते ही नहीं थे। अन्ततः हमने अखबार ही बन्ध कर दिया।

up

दूसरे दिन सुबह काका आएं, तब अखबार उसे नहीं मिले। उन्होंने पूछा तो जवाब दिया कि आज अखबार आया नही है।' चार दिन तक वह काका आएं। परन्तु एक ही जवाब उसे सुनने को मिले कि, अखबार नहीं आया है।' अन्ततः काका ने घर आना बन्ध कर दिया। उनके आगमन का कारण अखबार था। यह कारण दूर होने पर उनका आना भी बन्ध हो गया।

हम बैठे हो तो कईबार चींटियां काटती होती है। हम चींटि को हटाते रहे तो भी चींटियां आती ही रहती है। कारण? हमें पता नहीं है कि हमारे पास ही चोकलेट रखी है। जब तक यह चोकलेट है, तब तक चींटियां आती ही रहेगी। चींटियों को दूर करना हो तो चोकलेट को बाहर फेंक देनी पडती है। कारण दूर होने पर कार्य भी दूर हो जाता है। उसी तरह, चींटियां की

up

तरह, कामनाएं मन को काटती रहती है। इनसे बचने के लिए हम कामनाओं की पूर्ति करते रहते हैं। जैसे चींटि काटने पर उसे दूर करते हैं। वैसे कामना काटने पर उसकी पूर्ति करते रहते है। किन्तु नई नई कामनाएं बार-बार मनमें आती रहती है। तो फिर उसे दूर करने के लिए हमें इन कामनाओं का कारण क्या है, यह जानना पडेगा।

कामनाओं का कारण है अपने अन्दर स्थित अविवेक, अज्ञान। आत्मा जो सुखस्वरूप है उसे हमने दु:ख मान लिया है। और जगत के विषय जो वस्तुत: जड़ है, उसे सुख का साधन मान लेते है। इसलिए इन विषयों की प्राप्ति और उपभोग के लिए अपने मन में इच्छाएं जन्म लेती रहती है। उसकी पूर्ति के प्रयत्न के दौरान सुख-स्वरूप आत्मा की

up

हम अवमानना करते है। यह अज्ञान दूर हो जाय, ऐसा ज्ञान हो जाय कि सुख तो मेरा अपना, आत्मा का स्वभाव ही है। और जब विषयों में से मुझे सुख या आनन्द मिलता है, तो भी वह आत्मा का ही आनन्द होता है, विषयों में से नहीं आता है, तब अपने आप ही कामनाओं का त्याग हो जाएगा।

up

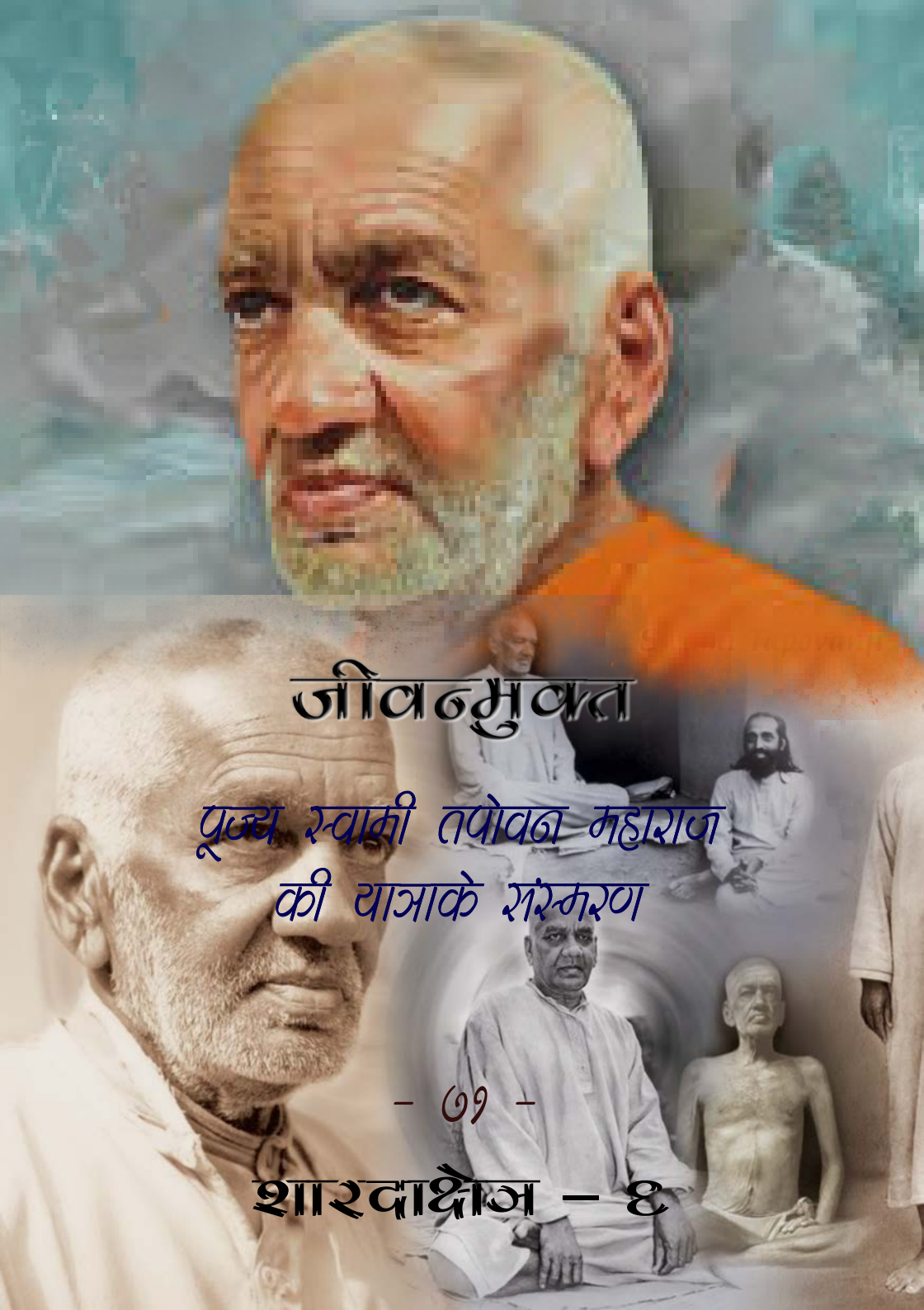

जीवन्मुक्त

पूज्य स्वामी तपोवन महाराज की यात्राके संस्मरण

- ७१ -

शारदाधाम – ६

जीवन्मुक्त शारदाक्षेत्र – ०६

पर्वतराज हिमालय के पश्चिमी किनारे पर हिमालय के ही अंतर्गत समुद्र की सतह से पांच हजार तीन सौ फुट की उंचाई पर लगभग चौरासी मील लम्बा तथा पच्चीस मील चौड़ा एक मनोहर मैदान है, जो विश्व विख्यात कश्मीर देश, अथवा कश्मीर देश का मध्यांश कहलाता है। यह सर्वविदित है कि इस भूभाग की समानता रखनेवाले दूसरे भूभाग इस संसारमें विरल है। यही पुराण प्रसिद्ध कश्यप महर्षि की तपोभूमि है। कभी यह प्रदेश दुष्प्राप्य था, किन्तु जल की प्रचुरता के कारण यह धीरे धीरे जननिबिड ग्रामों एवं सस्य–सम्पन्न खेतों से परिपूर्ण एक जनपद बन गया। काश्मीर प्रदेश को पुराने कवियों ने संसार का स्वर्ग

कहा है और नवीन कवियों ने भारत का 'स्विट्जरलैंड'। इतिहास इस तथ्य की घोषणा करता है कि मुगल बादशाह इससे अधिक प्यार करते थे।

हिमाच्छन्न शिखरों की पर्वतमालाओं से आवृत इस विशाल मैदान के बीचों बीच झेलम नदी, जिसका पौराणिक नाम 'वितस्ता' था, मन्दगति से अमन्द सुन्दरता के साथ प्रवाहित हो रही है। काश्मीर देश की राजधानी 'श्रीनगर' इसी नदी के किनारे मैदान के बीच विराजमान है। श्रीनगर और उसके प्रांत भाग लाल कमल आदि अनेक पुष्पों से भरे सरोवरों तथा अति विचित्र वृक्षों, लताओं एवं पौधों से परिपूर्ण है। यह स्थान दर्शकों की आंखों को शीतलता देनेवाले अनेक बागबगीचों के लिए प्रसिद्ध है। यद्यपि श्रीनगर प्राचीनकाल में दुर्गम था, तथापि आज वाहनों के

up

निरन्तर आवागमन के कारण सुगम हो गया है। श्रीनगर रावलपिण्डी से एक सौ छ्यानवें मील तथा जम्मू-जम्बु से दो सौ छः मील दूर है। जंबु जांबवान का तपःस्थान था। अब वह काश्मीर राजा के द्वारा शासित एक छोटे राज्य की राजधानी है।

'पीर पंजल नामक एक बडी पर्वतमाला कश्मीर देश को भारतीय मैदान से अलग कर देती है। इस पर्वतमाला को बहुधा पैदल ही पार करते हुए अनेकानेक हैन्दवा साधु प्रतिवर्ष गर्मी के दिनों में काश्मीर की यात्रा करते है। चाहे कितना ही दुर्गम हो या सुगम, और दूरस्थ हो निकटस्थ, किन्तु भारत देश में कोई ऐसा स्थान न होगा जो साधुओं की यात्रा का विषय न बनता हो। यदि अंग्रेज और धनवान् लोग सुखवास के लिए प्रतिवर्ष कश्मीर जाते हैं तो साधु महात्मा देवदर्शन के लिए वहां की यात्रा करते हैं। कश्मीर के पुण्यधामों में यात्रा करने तथा वहां तपोवृत्ति में कुछ दिन रहने

up

की इच्छा से इस साधु ने भी सन् 1927 के मई महीने में वहां की यात्रा की थी। कश्मीर के मुख्य नगर श्रीनगर में रहते हुए वहां की प्राकृतिक रमणीयता मेरे मन को बहुत ही आनंदित करती थी, फिर भी रजोवृत्ति वाले बहुजनों की बहुलता से मेरा एकांत प्रिय मन उस नगर में अधिक रंजित न होता था। छः हजार फुट की उंचाई पर श्रीनगर के निकट शंकर पर्वत का शिखर देश है, जो इसी नगर को 'श्री' प्रदान करता है। यहीं शंकरपादों से प्रतिष्ठित शिवलिंग विराजित है, इसी प्रदेश का तथा यहां से निचले प्रान्त का विस्तृत दिव्यदर्शन मेरे मन को अति प्रशांत तथा आनंदित कर देता था। यहां पर कुछ ही दिन रहकर मैंने शारदा क्षेत्र के लिए प्रस्थान किया। यह क्षेत्र श्रीशंकर के पीठारोहण के कारण विश्वविख्यात है।

up

श्री रामचरितमानस पर आधारित

— ०१ —

कैकेयी चरित्र

कैकेयी चरित्र – ०९

कैकेयी ने भरत की जिज्ञासा के उत्तर में बड़े ही उत्साह भरे स्वर में अपनी महान् भूमिका का इतिहास प्रस्तुत किया। उन्हें यह विश्वास था कि जब भरत यह सुनेंगे कि किस प्रकार उन्हें कारागार में डालने की योजना बनाई जा रही थी और कैसे उन्होंने इसके स्थान पर पुत्र के लिए सिंहासन की व्यवस्था की, तब भरत का मन कृतज्ञता से भरकर उनके चरणों में नत हुए बिना नहीं रहेगा। अभागी मां ने अपने महान् पुत्र को पहिचानने में कितनी बड़ी भूल कर दी थी, इसका पता तो उन्हें तब चला कि जब सारा समाचार सुनकर भरत फूट पड़े।

यहीं से कैकेयी के जीवन में ग्लानि और पश्चात्ताप की प्रक्रिया का श्रीगणेश हुआ। उन्होंने अब तक सारी अयोध्या की आलोचना के वाग्बाणों को जिस कल्पित आधार के कवच पर झेल लिया था वह थी भरत के राज्य की कल्पना। पर जब कवच ही शस्त्र बनकर प्रहार करने लगे तब योद्धा के नि:सहाय रूप की कल्पना की जा सकती है। एक मां जिसने अपने पुत्र को राज्य दिलाने के लिए क्या कुछ नहीं किया, अपने ही पुत्र द्वारा इतने निर्मम और कठोर शब्दों को सुनने की कल्पना भी नहीं कर सकती थी। कहां तो वे कृतज्ञ भरत की कल्पित मूर्ति को हृदय में संजोए हुए थी और कहां उसी पुत्र के प्रहारों से उनकी सारी कल्पना धूल में मिल गई! इस कठोर शब्दावली का प्रयोग उस सन्त के द्वारा किया गया जो अपने मौन और मृदुभाषिता के लिए सारी अयोध्या में विख्यात था।

प्रस्तुत प्रसंग के प्रारम्भ में भरत का स्मरण राजकुमार के

up

रूप में करते हुए गोस्वामीजी ने बड़ी ही अभिप्रायमयी भाषा का प्रयोग किया है। यह एक पुत्र द्वारा की जानेवाली मां की भर्त्सना मात्र नहीं है। यह तो एक राजकुमार के द्वारा अपराधी को दिया जानेवाला दण्ड है। गुरुजनों के लिए कठोर शब्दों का प्रयोग करना ही मृत्युदण्ड के तुल्य है। इसका बड़ा ही मार्मिक विश्लेषण महाभारत में प्राप्त होता है। अर्जुन की यह प्रतिज्ञा थी कि वह गाण्डीव की निन्दा करनेवाले को मृत्युदण्ड देगा। किसी अवसर विशेष पर धर्मराज युधिष्ठिर के द्वारा गाण्डीव की निन्दा की गई। अर्जुन शस्त्र लेकर युधिष्ठिर के वध के लिए उद्यत हो गया। भगवान् कृष्ण के द्वारा रोके जाने पर उसने अपनी प्रतिज्ञा का स्मरण दिलाया। भगवान् कृष्ण ने धर्म का विश्लेषण करते हुए अर्जुन को यह बतलाया कि युधिष्ठिर जैसे सम्मानित भ्राता के लिए कुछ कठोर वाक्यों का प्रयोग ही मृत्युदण्ड है। अर्जुन ने प्रभु के

up

आदेश का पालन किया। राजकुमार भरत के समक्ष भी यह धर्म-संकट था। एक न्यायपरायण राजकुमार के द्वारा अपराधी को दण्ड दिया जाना ही नीतिसंगत है। पर जब दण्डनीय अपराधिनी मां के वन्दनीय पद को शोभित कर रही हो तब उसे कैसे दण्डित किया जाय? वस्तुतः कैकेयी के लिए की गई कठोर शब्दों में भर्त्सना ही राजकुमार के द्वारा दिया जाने वाला मृत्युदण्ड था। जहां कैकेयी के वाक्यों द्वारा भरत पर पड़ने वाले प्रभाव के लिए गोस्वामीजी ने अनेक उपमाओं का प्रयोग किया है वहां भरत के वाक्यों से कैकेयी पर कैसी प्रतिक्रिया हुई इसका कोई उल्लेख नहीं किया गया। इसका सांकेतिक तात्पर्य यही है कि वस्तुतः इन वाक्यों से कैकेयी की मृत्यु हो गई। जीवित व्यक्ति की प्रतिक्रिया का ही उल्लेख किया जा सकता है। इसके पश्चात् कैकेयी का पुनर्जन्म होता है।

up

कथा प्रसंग

भक्तराज ध्रुव

कथा प्रसंग – भक्तराज ध्रुव

मनुपुत्र उत्तानपाद की पत्नी सुरुचि उनकी अत्यन्त प्रिया थी। दूसरी पत्नी सुनीति पति से उपेक्षित और शरणहीन थी। वह नित्य प्रति भगवान् नारायण की ही शरण में रहती थी, नारायण जो अनाश्रितों के आश्रय है। पति की गोद में सुरुचि के पुत्र उत्तम को देख सुनीतिपुत्र ध्रुव ने भी अपने पिता की गोद में चढ़ने का प्रयास किया। जिसके फलस्वरूप सुरुचि ने उसे अत्यन्त कठोरता से प्रताडित किया। पत्नी के वशीभूत हुए पिता चुपचाप देखते रह गए। सुरुचि के कटुवचनों से आहत ध्रुव वहां से हट गया और अपनी माता के पास गया। माता ने भी उस बालक को यही बतलाया कि मनुष्य को अपने कर्मो की गति को पार करने के लिए एकमात्र भगवान् नारायण की ही शरण में जाना चाहिए। यह सुन कर

पांच वर्षीय स्वाभिमानी बालक नारायण की आराधना का मन में दृढ़ निश्चय करके नगर से निकल गया। मार्ग में उसकी नारदजी से भेंट हुई और उनसे मंत्रदीक्षा प्राप्त हुई। फिर वह मधुवन में जाकर नारायण की आराधना और तपस्या करने लगा। ध्रुव के पिता उत्तानपाद का हृदय अत्यन्त दुःखी हो गया। उसी समय नारदजी उनके नगर गएं और उनको सान्त्वना देते हुए शान्त किया। ध्रुव भी एकाग्र चित्त से प्रभु की आराधना करने लगा और क्रमशः उसकी तपस्या वृद्धि को प्राप्त होती गई। इस प्रकार उसने पांच महिने बिताएं। ध्रुव के तप के बल से सभी दिशाओं में श्वास-अवरुद्ध होने लगी। तब देवताओं ने प्रभु से प्रार्थना की। ध्रुव के तप और देवताओं की प्रार्थना से प्रभु करुणा से द्रवित हो गएं। प्रभु के ध्यान में निमग्न उस बालक ध्रुव के समक्ष फिर नारायण स्वयं गरुड पर आरूढ़ होकर प्रकट हुएं। प्रभु के दर्शन पाकर ध्रुव अत्यन्त हर्षित होकर भगवान् के भावमग्न हो गया। तब भगवान् ने उसे स्तुति करने का इच्छुक जानकर उसके गाल पर प्रेम से

up

शंख छुआ दिया। तब भक्तिसभर तपोबल से युक्त ध्रुव विमल मन से युक्त भगवान् की स्तुति करने लगा। उसके मनोभाव को जानते हुए प्रभु ने कहा कि, चिरकाल तक राज्य का उपभोग कर लेने के पश्चात् तुम सब से उपर स्थित उस ध्रुवपद को प्राप्त करो, जो पुनरावृत्तिरहित लोक है।

सभी लोगों को आनन्दित करता हुआ राजकुमार ध्रुव नगर को लौट गया। उसके पिता उसके उपर राज्यभार सौंपकर वन को चले गएं। प्रभु की कृपा से पूर्णकाम हुए ध्रुव ने चिरकाल तक राज्य का उपभोग किया। यक्ष के द्वारा पिता उत्तमपाद के मारे जानेपर ध्रुव उस यक्ष के साथ युद्ध करने लगे किन्तु मनु के कहने पर युद्ध को रोक भी दिया। ध्रुव के शान्तस्वभाव से प्रसन्न होकर कुबेर उसके पास पहुंचें। महात्मा ध्रुव ने कुबेर से भी प्रभु में दृढ़भक्ति का ही वरदान मांगा। प्रभु के पार्षदों के द्वारा लाये गए विमान पर ध्रुव अपनी माता के संग आरूढ होकर चले गएं। वे ध्रुवपद पर आज भी विराजमान हैं।

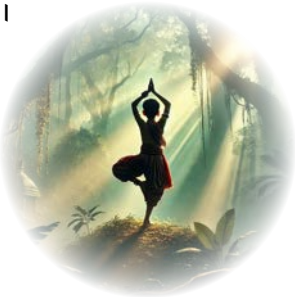

up

Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self

Activities

Activities

TLE

Evening Bhajans

Activities

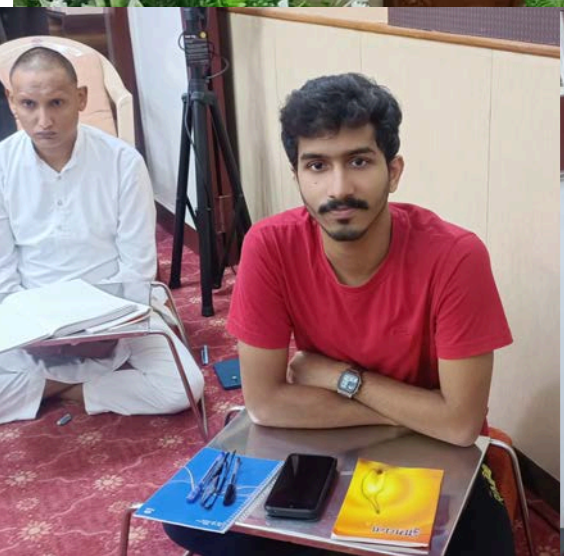

Activities

Vande Guru Paramparam

Vande Guru Paramparam

Sudhanshu Dubey does Guru Paduka Puja

सत्यं ज्ञानं अनन्तम्

Bhandara on Guru Poornima

Activities

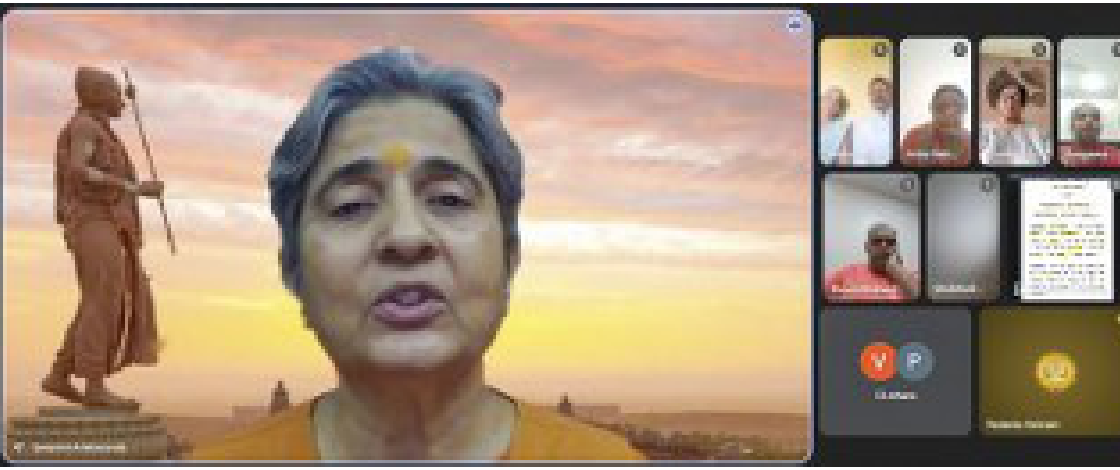

Weekly Online Classes

Activities

Bhajans at Vedanta Ashram every Monday

Activities

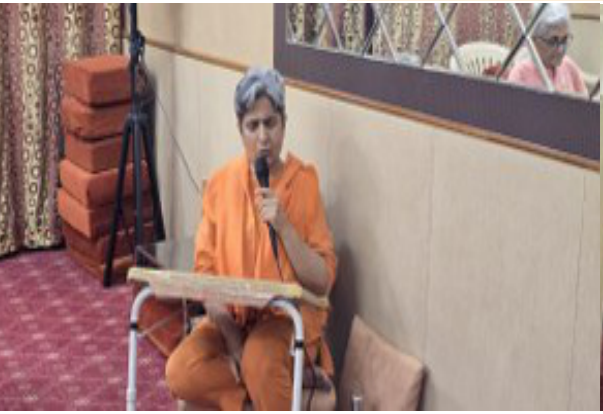

Weekly bhajans at Vedanta Ashram

Activities

9th Birthday of our beloved Daya

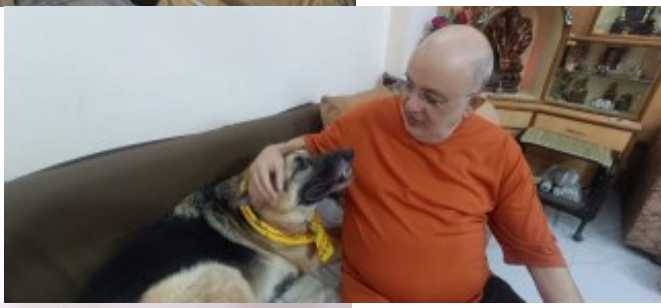

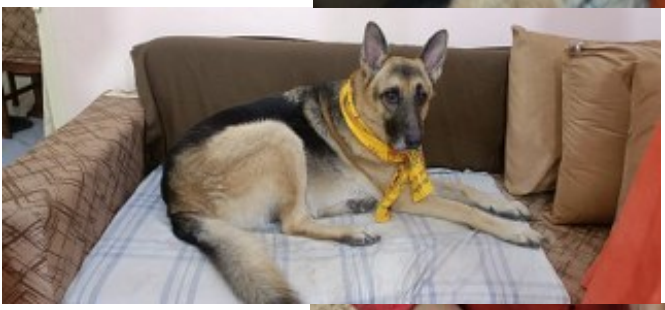

Activities

Activities

Birthday blessings - Manju Garg & Sunil Garg

Activities

Activities

Programs

Poojya Guruji Swami Atmanandaji

conducts

Daily Classes on

Bhagwad Geeta

with Shanker Bhashya on

Chapter 6 (Dhyan Yoga)

@ Vedanta Ashram, Indore

VEDANTA CAMP

by Poojya Guruji & Ashram Mahatmas

From 30th Aug to 4th Sep

On Gita 8th Chapter

@ Vedanta Ashram, Indore

Click here for more details

Registration Form

Programs

VEDANTA CAMP

by P. Swamini Amitanandaji

From 12th to 16th Aug

On STHITAPRAGYA

Gita Ch. 2

Raman Adhyatmik Sewa Kendra,

Kheda Dist, Gujrat (In Gujrati)

Online Vedanta Class

On Upadesh Saar & Gita Ch. 6

By P. Sw. Amitanandaji &

Sw. Samatanandaji

Every Sat & Sun (4.00-5.00 PM)

on Google Meet

Internet News

Talks on (by P. Guruji) :

Video Pravachans on YouTube Channel

(Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS

SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA

SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING

MORAL STORIES ETC

Audio Pravachans (Click here)

GITA / UPANISHADS / PRAKARAN GRANTHAS

SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA

SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING

MORAL STORIES ETC

Vedanta Ashram YouTube Channel

Vedanta & Dharma Shastra Group

Monthly eZines

Vedanta Piyush - July '26 / **Vedanta Sandesh - Aug '26**

Visit us online :

Vedanta Mission

Check out earlier issues of :

Vedanta Piyush

Join us on Facebook :

Vedanta & Dharma Shastra Group

Subscribe to our WhatsApp Channel

Vedanta Ashram Channel

Published by:

Vedanta Ashram, Indore